चेतना का ऊर्ध्वारोहण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

यह संसार जड़ और चेतन दो तत्वों के संयोग से बना है। जड़ तत्व गलन मिलन धर्मा है। इसमें वर्ण स्पर्श, गन्ध, शब्द आदि गुण होते हैं। चेतन तत्व प्रकाश स्वरूप है। चेतना के कारण हलन–चलन होती रहती है। परमाणु सूक्ष्म होते हैं। इन्हें आंखों से नहीं देखा जा सकता। परमाणुओं में चतुस्पर्श होता है। चेतन और अचेतन का संयोग ही बंधन है। चेतनामय असंख्य परमाणुओं के पिण्ड को आत्मा कहा जाता है। चेतना में सुख–दुःख की अनुभूति होती है। इसमें प्रजनन क्रिया होती है। चेतना अमूर्त्त है। कार्मण शरीर कर्मों का भुगतान करता है। जो वस्तु जितना हल्की होती है वह उतना ऊपर जाती है और जो वस्तु भारी होती है वह नीचे आती है। आत्मा ऊर्ध्वारोहण तब करती है जब कर्मों के भार से मुक्त होती है।

मानव जीवन सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है। मानव में बुद्धितत्व है। बुद्धितत्व अन्य प्राणियों में नहीं है। मुक्ति प्राप्ति के लिए चेतना का ऊर्ध्वारोहण होना आवश्यक है। सोई हुई चेतना को हम कैसे जागृत करें? यह विषय बड़ा ही गम्भीर है। जो समय से जग जाता है वह जीवन में कभी असफल नहीं होता। कहा भी गया है कि समय चूकि पुनि का पछताने–अर्थात जो समय के मूल्य को नहीं समझ पाता उसे बाद में पश्चाताप करना पड़ता है। वर्षा के समय जब किसान बीज बपन करता है तो मिट्टी पानी के संयोग से बीज शीघ्र ही अंकुरित होकर के बढ़ने लगता है। हमारी चेतना के सम्बन्ध में भी यही तथ्य लागू होता है। मानव की चेतना सुशुप्त अवस्था में रहती है। हम सांसारिक भावों में ही जीते रहते हैं। किन्तु अच्छा संयोग मिलने या भीतर की प्रेरणा से कभी यह ज्ञान होता है कि शेष जीवन आत्म कल्याण में लगाना है। इस संसार में मनुष्य ही सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। हमें बाहर का ज्ञान कम और अन्दर का ज्ञान अधिक प्रभावित करता है। इसीसे नव चेतना का जागरण होता है। समय का सदुपयोग करके चेतना को जगाएं। कल किसने देखा है? कल आता भी है कि नहीं कोई नहीं जानता। इसलिए वर्तमान का उपयोग होना चाहिए।

मनुष्य को कल के भरोसे कभी नहीं रहना चाहिए। सदैव कार्य करते रहना चाहिए सफलता अवश्यक मिलती है। सही दिशा में किया गया पुरूषार्थ मनुष्य को लक्षित मंजिल तक पहुंचा देता है। भीतर जो चेतना है उसके साथ कार्मण शरीर का योग है उसको साथ लेकर व्यक्ति चलता है। कार्मण शरीर के साथ आत्मा ऐसा चिपका रहता है कि आत्मा का ज्ञान स्पष्ट ही नहीं हो पाता। कार्मण शरीर और चेतना का संघर्ष चलता रहता है।

चेतना का अर्थ है शक्ति और ऊर्ध्वारोहण का अर्थ है ऊपर की ओर जाना। जो वस्तु हल्की होती है, जिसमें गुणवत्ता होती है वह वस्तु ऊपर की ओर गमन करती है। आत्मा जब कर्मों के बोझ से आवृत्त होती है तो उसका ऊर्ध्वगमन नहीं हो सकता। जब कर्मों का आवरण हटता है और चेतना अपने वास्तविक स्वरूप में आती है तब आत्मा का ऊर्ध्वगमन होता है। पुनरुत्थान का कार्यक्रम भी ऊर्ध्वारोहण का कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में आत्मा, परमात्मा, जीवजगत और सामाजिक कार्यों से सरोकार रखने वाले विषयों को प्रवचन के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

मानव यदि अच्छी बात सुनता है, उसे जीवन में उतारता है तो उसका भी ऊर्ध्वारोहण होता है। पृथ्वी पर दो तत्व शाश्वत हैं– चेतन और अचेतन। चेतन कभी अचेतन नहीं हो सकता और अचेतन कभी चेतन नहीं हो सकता। चेतना शरीर के माध्यम से व्यक्त होती है। सभी मनुष्यों में सत्व, रज और तम तीन गुण पाये जाते हैं। सत्व गुण हल्का, प्रकाशक और जीव को ऊर्ध्वगामी बनाता है। रजो गुण मानव में कामवासना उत्पन्न करता है और चंचल बनाता है। रजो गुण लाल रंग का होता है। तमो गुण अन्धकार युक्त और मोह उत्पन्न करने वाला होता है। यद्यपि ये तीनों गुण सभी मनुष्यों में पाये जाते हैं किन्तु जिसमें जिस गुण की प्रधानता होती है वह मनुष्य उसी प्रकृति का हो जाता है। सत्व गुण प्रधान मनुष्य अहिंसात्मक और शांत प्रवृत्ति का होता है। उसका सम्पूर्ण कार्य उसके व्यवहारों से झलकता रहता है। विज्ञान का एक नियम है कि शक्ति कभी नष्ट नहीं होती उसका रूपान्तरण होता है। चेतना ज्ञान, दर्शन और चारित्र युक्त है। आत्मा का शुद्ध स्वरूप यही है।

कार्मण शरीर पुण्य पाप का चिट्ठा है। मन, वचन, काया का क्रियाकलाप तैजस शरीर करता है। इसमें रूपान्तरण होता रहता है। मानव का शरीर एक फैक्ट्री है इसमें अनेक गतिविधियां होती रहती हैं। चेतन और जड़ के संयोग से यह जीवन चलता है। महर्षि पतंजलि ने मन को

महत्व नही दिया। उनका योगसूत्र शुरू होता है चित्त की वृत्तियों के निरोध से। चित्त हमारे भीतर की कल्पना है, जो मन के ज्ञानात़्मक पक्ष का संचालन करता है। मन के दो पक्ष हैं– ज्ञानात्मक तथा भावात्मक। जो उसका ज्ञानात्मक पक्ष है, उसका संचालन चित्त के द्वारा होता है और जो उसका क्रियात्मक पक्ष है उसका सचांलन भाव के द्वारा होता है।

मन दो का प्रतिनिधित्व कर रहा है – चित्त का तथा भाव का। मन अचेतन है, चित्त चेतन है। शरीर अचेंतन है किन्तु चेतना से युक्त होने के कारण चेतना की सारी क्रिया करता है, वैसे ही मन भी अचेतंन है। मन, वचन तथा शरीर तीनो अचेतन हैं किन्तु चेतना से युक्त होकर चेतना की क्रिया करते हैं। मन पुदगलो को ग्रहण करता है। इसलिए नव चेतना का अंकुरण रहने से स्फूर्ति बनी रहती है। चेतना जागृत रहती है जिससे विकास होता है।